



पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 12

अंक : 6

फरवरी, 2025

मूल्य : ₹2.00



पशुधन नित्य सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

76 वें गणतंत्र दिवस पर वेटेनरी विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित द्वारा दिये गये उद्बोधन के अंश



76वें गणतंत्र दिवस की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं और बधाईयां। भारत का गणतंत्र आज 75 वर्ष पूरे कर चुका है और इस प्लेटिनम जुबली की यात्रा बहुत ही कठिन थी लेकिन आज की तारीख में संतोषजनक भी है। भारत जब आजाद हुआ तब हमारे पास अपना कोई संविधान नहीं था। हमारा स्टेटस एक गणतंत्र का यानि संप्रभुत्व राज्य का नहीं था। देश के विभाजन के समय देश की अर्थ व्यवस्था लगभग समाप्त हो चुकी थी और इस व्यवस्था में भारत ने एक सकल्प लिया था कि न केवल गणतंत्र के रूप में विकसित होंगे बल्कि संप्रभुत्व, समर्थ राष्ट्र के रूप में विकसित भारत करने और उसे कर दिखाने का प्रयास करेंगे। यात्रा कठिन थी ऐसी स्थिति में संविधान बनाने की प्रक्रिया 1947-1949 तक चली उसमें हमको एक संविधान दिया जो दुनिया का सबसे बड़ा लिखित संविधान बना। संविधान बनाने की प्रक्रिया बहुत लम्बी चली। मेरे दृष्टि में आया कि 24 नवम्बर 1948 को पूरे दिन तत्कालीन अनुच्छेद 38 और वर्तमान संविधान में

अनुच्छेद 48 जिसमें ऑल राउण्ड डवलपमेंट और विशेष रूप से पशुओं के संरक्षण पर बहस हुई और विशेष रूप से पशुओं को किस रूप में देखा जाये। संविधान सभा में स्पष्ट रूप से विभाजन था। एक कहता था पशुधन के रूप में, पूज्य रूप में और एक का कहना भोज्य के रूप में। यह दोनों दृष्टियां उस संविधान सभा के उस दिन की पूरी कार्यवाही में दर्ज है। शायद दुनिया के विशिष्ट संविधानों में से भारत का संविधान है जो मानव के साथ-साथ पशुओं के संरक्षण के लिए संवैधानिक संविधान बना था। भारत के युवा भारत का भविष्य है। भारत इस वक्त दुनिया का सबसे युवा देश भी है। इसके युवाओं की जनसंख्या के आधार पर विश्व को आगे बढ़ने की आवश्यकता हो गई है। भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के पास आई हुई रिकवेस्ट को देखें तो कम से कम 1 करोड़ युवाओं की आवश्यकता विश्व के विभिन्न देशों ने भारत को ओफिसियली लिखकर दी हुई है कि हमें इतने लोग चाहिए। शिक्षित, कौशल और हमारी भाषा को जान सकने वाले लोग और हमें यहीं से चाहिए क्योंकि भारतीयों ने अपने 77 वर्षों के स्वतंत्रता काल के पश्चात जो भी छवि बनाई है वो यही है कि भारत के लोग जिस देश में बसते हैं, उस देश की समृद्धि के लिए काम करते हैं, उस देश के विकास के लिए काम करते हुए अपने देश को नहीं भूलते लेकिन षड़यंत्र नहीं करते हैं। आज हम दुनिया की सबसे बड़ी सक्षम अर्थ व्यवस्थाओं में से एक हैं। हमें अपने योगदान पर भी विचार करना होगा। अपने बौद्धिक क्षमता को बढ़ाना होगा, भारतीय होने के गर्व के साथ-साथ उसको महसूस करते हुए अपने वैश्विक नागरिक होने का अधिग्रहण देना होगा। वर्ष 2049 तक भारत दुनिया की सबसे बड़ी इकॉनोमी होगी। एकल स्वास्थ्य योजना के तहत मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण और पशु स्वास्थ्य इन तीनों को समग्र रूप से मिलाकर ही हमें आगे बढ़ना होगा। एक बार पुनः 76वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। जय हिन्द! जय भारत!



श्री जोराराम कुमावत, माननीय कैबिनेट मंत्री, पशुपालन, डेयरी, गोपालन एवं देवस्थान विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा पशुपालन डिप्लोमा कार्यक्रम: सुधार और उपलब्धियां विषय पर कार्यशाला में दीप प्रज्ज्वलन करते हुए।



किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

—महात्मा गांधी



विश्वविद्यालय समाचार

अश्व व्यवहार, नियंत्रण एवं कल्याण विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर और ब्रुक इंडिया के संयुक्त तत्वावधान में वेटरनरी विश्वविद्यालय के इन्टर्न विद्यार्थियों हेतु "घोड़ों, गधों एवं खच्चरों के व्यवहार, कल्याण एवं सुरक्षित हैंडलिंग" विषय पर 3 जनवरी को दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन हुआ। समापन सत्र को सम्बोधित करते हुए आचार्य मनोज दीक्षित ने कहा कि पशुओं और मनुष्य का संबंध बहुत पुराने काल से ही है जो कि जीवन यापन के लिए परस्पर एक दूसरे के पूरक है। अश्व चिकित्सा का विस्तृत विवरण भारतीय ग्रन्थों में वर्णित है। कुलपति आचार्य दीक्षित ने पशुचिकित्सकों को अपने ज्ञान एवं कौशल का समुचित उपयोग मानव एवं पशुकल्याण हेतु करने हेतु प्रेरित किया। विभागाध्यक्ष सर्जरी एवं रेडियोलॉजी प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि दो दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान विद्यार्थियों को ब्रुक इंडिया के डॉ. विवेकानंद द्वारा ब्रुक इंडिया के उद्देश्यों, अश्व कल्याण, घोड़ों में लगड़ापन एवं अन्य विकार व उपचार, खुरकटिंग आदि विषयों पर व्याख्यान दिया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 60 प्रशिक्षार्थियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान कार्यकारी अधिष्ठाता प्रो. राजेश कुमार धूडिया ने सभी का स्वागत किया एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। समापन सत्र के दौरान निदेशक अनुसंधान प्रो. बी.एन. श्रृंगी, शिक्षक, विद्यार्थी मौजूद रहे।



सर्जिकल एवं डायग्नोस्टिक इमेजिंग तकनीकों के पशु उपचार में उपयोग विषय पर 21 दिवसीय शीतकालीन प्रशिक्षण सम्पन्न

वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर के सर्जरी एवं रेडियोलॉजी विभाग द्वारा आई.सी.ए.आर. वित्तपोषित "पशुचिकित्सा सर्जरी और डायग्नोस्टिक इमेजिंग में नवीन तकनीकों को फार्म एवं पालतू पशुओं में विभिन्न सर्जिकल परिस्थितियों के प्रबंधन में उपयोग" विषय पर 21 दिवसीय शीतकालीन प्रशिक्षण दिनांक 7-27 जनवरी तक आयोजित किया गया। प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने कहा कि वेटरनरी महाविद्यालय के सर्जरी एवं रेडियोलॉजी विभाग द्वारा पशु उपचार की कई तकनीकों को इजाद किया गया है। इस महाविद्यालय की शल्य चिकित्सा हेतु देश के ख्याति प्राप्त अग्रणी महाविद्यालयों की श्रेणी में गिनती की जाती है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि निदेशक उच्च अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर डॉ. ए.के. घोरूई ने प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि दीर्घकालीन प्रशिक्षणों के माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों के नई तकनीकों एवं ज्ञान को सीखने का मौका मिलता है। अधिष्ठाता प्रो. हेमन्त दाधीच ने बताया कि महाविद्यालय के सर्जरी विभाग द्वारा देश में पहली लाईव एनिमल सर्जरी प्रक्टिस को शुरू किया गया था और इस विभाग ने शल्य चिकित्सा की कई नई तकनीकों को भी इजाद किया है। समापन सत्र को सम्बोधित करते हुए कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने कहा कि वेटरनरी महाविद्यालय के सर्जरी एवं रेडियोलॉजी विभाग द्वारा पशु उपचार की नई-नई तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है। मुख्य अतिथि पूर्व कुलपति, राजुवास प्रो. ए.के. गहलोत ने कहा कि विश्वविद्यालय में कुशल मानव संसाधन एवं अत्याधुनिक उपकरण है जो कि इस तरह के दीर्घकालीन प्रशिक्षणों हेतु उपयुक्त है हमें इन संसाधनों को अधिक से अधिक उपयोग कौशल विकास हेतु करना चाहिए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि निदेशक अश्व अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर डॉ. एस.सी. मेहता ने प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते हुए अपने विचार व्यक्त किये। प्रशिक्षण निदेशक प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि इस प्रशिक्षण में देश के विभिन्न राज्यों से 25 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। अधिष्ठाता प्रो. हेमन्त दाधीच ने कार्यक्रम समाप्ति पर धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन सत्र के दौरान अधिष्ठाता स्नातकोत्तर अध्ययन प्रो. राजेश कुमार धूडिया, निदेशक एच.आर.डी. प्रो. राहुल सिंह पाल, परीक्षा नियन्त्रक प्रो. मनीषा माथुर, फ़ैकल्टी सदस्य, विद्यार्थी एवं प्रशिक्षणार्थी उपस्थित रहे।



डायग्नोस्टिक इमेजिंग यूनिट का हुआ लोकार्पण

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर में केम्पस परिसर में 27 जनवरी को कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित द्वारा डायग्नोस्टिक इमेजिंग यूनिट का लोकार्पण किया। कुलपति आचार्य दीक्षित ने बताया कि पशुचिकित्सा संकुल बीकानेर के सुदृढ़ीकरण एवं पशुपालकों को बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाने हेतु विश्वविद्यालय निरन्तर प्रयत्नरत है। इस अवसर पर पूर्व कुलपति राजुवास प्रो. ए.के. गहलोत, अधिष्ठाता एवं प्रति कुलपति प्रो. हेमन्त दाधीच, अधिष्ठाता स्नातकोत्तर अध्ययन प्रो. राजेश कुमार धूडिया, विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।



कुलपति ने किया डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय का निरीक्षण

कुलपति राजुवास आचार्य मनोज दीक्षित ने डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय (सी.डी.एस.टी.) बीकानेर का 10 जनवरी को निरीक्षण किया। महाविद्यालय की अधिष्ठाता प्रो. मनीषा माथुर ने पौधे भेंट कर कुलपति आचार्य दीक्षित का स्वागत किया एवं महाविद्यालय में चल रही विभिन्न गतिविधियों एवं निर्माण कार्य के प्रगति की जानकारी दी। कुलपति आचार्य दीक्षित ने महाविद्यालय की विभिन्न इकाईयों में नवीन तकनीकी उपयोग के सुझाव दिये एवं शोध कार्यों के पेटेंट, नई तकनीकों एवं विभिन्न इकाईयों के आपसी समन्वय से कार्यों करने के हेतु निर्देशित किये। कुलपति महोदय ने प्राचीनकाल के भारतीय गणितज्ञ एवं इन की तकनीकी खोजों पर भी प्रकाश डाला। प्रति कुलपति प्रो. हेमन्त दाधीच ने महाविद्यालय को आई.सी.ए.आर. के निर्देशानुसार भूमि आवंटन एवं अन्य सुविधाओं के विकास हेतु सुझाव दिया। महाविद्यालय के टीचिंग एसोसिएट इन्जी. मुकुल सेन ने अपने शोध उपकरणों का प्रदर्शन किया।





76वें गणतंत्र दिवस का भव्य आयोजन कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने किया ध्वजारोहण

गणतंत्र दिवस के 76वें समारोह के अवसर पर वेटेनरी विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने विश्वविद्यालय प्रांगण में ध्वजारोहण कर सलामी दी। कुलपति आचार्य दीक्षित ने सभी को 76वें गणतंत्र दिवस की बधाई देते हुए कहा कि हमें अपने कर्तव्यों को सत्य निष्ठा एवं ईमानदारी से निर्वाह करते हुए जीवन का प्रत्येक क्षण देश के उत्थान एवं नागरिक कल्याण में बिताना चाहिए। कुलपति आचार्य दीक्षित ने कहा कि विश्वविद्यालय का प्रयास रहा है कि पशुपालकों को श्रेष्ठ पशुचिकित्सा सुविधा उपलब्ध हो सके। भारत का गणतंत्र 75 वर्ष पूर्ण कर चुका है और इस प्लेटिनम जुबली की यात्रा बहुत संघर्षमय लेकिन संतोषजनक रही है। भारत जब आजाद हुआ तब हमारा अपना संविधान नहीं था। देश के विभाजन से अर्थव्यवस्था लगभग समाप्त हो चुकी थी लेकिन भारत ने यह संकल्प लिया कि एक समर्थ राष्ट्र बनाएंगे। भारत का संविधान सबसे बड़ा लिखित संविधान है। 75 वर्ष के गौरवशाली इतिहास में भारत ने सभी क्षेत्रों में प्रगति की है। समारोह में विद्यार्थियों एवं कर्मिकों ने देश भक्ति से ओतप्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दी। गणतंत्र दिवस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की वित्त नियंत्रक बी.एल. सर्वा, प्रति कुलपति प्रो. हेमन्त दाधीच सहित डीन-डायरेक्टर, फैकल्टी सदस्य, विद्यार्थी आमजन मौजूद रहे।



प्रति कुलपति प्रो. दाधीच ने राज्यपाल से की शिष्टाचार भेंट विश्वविद्यालय की शैक्षणिक, प्रसार एवं अनुसंधान प्रगति की दी जानकारी

वेटेनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के प्रति कुलपति प्रो. हेमन्त दाधीच ने 15 जनवरी को राजस्थान के माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री हरिभाऊ किसनराव बागड़े से शिष्टाचार भेंट की एवं विश्वविद्यालय के पशुचिकित्सा के क्षेत्र में शैक्षणिक, प्रसार एवं नवीन अनुसंधान के कार्यों की प्रगति से अवगत कराया। प्रति कुलपति प्रो. हेमन्त दाधीच ने राज्यपाल श्रीमान हरिभाऊ किसनराव बागड़े को विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालकों के हितार्थ चलाये जा रहे विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों, तकनीकी हस्तांतरण, नवीन अनुसंधान परियोजना एवं विश्वविद्यालय के अनुसंधान केन्द्रों पर विभिन्न नस्लों के देशी गौवंश के संरक्षण एवं संवर्द्धन तथा शैक्षणिक प्रगति, वित्तीय सुदृढीकरण, सामाजिक सरोकार के कार्य एवं भविष्य की कार्य योजनाओं के बारे में जानकारी दी। राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री हरिभाऊ किसनराव बागड़े ने विश्वविद्यालय की आशातीत प्रगति पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए गौ संरक्षण एवं उन्नयन, पशु उत्पादकता एवं पशुपालक कौशल विकास के कार्यों के सुदृढीकरण हेतु सुझाव दिये। इस अवसर पर माननीय राज्यपाल के विशेषाधिकारी श्री राजकुमार सागर भी मौजूद रहे।



अंतर्राष्ट्रीय ऊंट उत्सव पर विश्वविद्यालय प्रदर्शनी को द्वितीय स्थान

अंतर्राष्ट्रीय ऊंट उत्सव-2025 के तहत पर्यटन विभाग, राजस्थान एवं जिला प्रशासन के संयुक्त तत्वावधान में बीकानेर में कृषि एवं पशुपालन संबद्ध समस्त संस्थानों/केन्द्रों/विश्वविद्यालयों आदि की उन्नत वैज्ञानिक तकनीकी संबंधी अद्यतन जानकारी पर्यटकों व आमजन के समक्ष प्रदर्शित करने के प्रयोजनार्थ दिनांक 11 जनवरी, 2025 को राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर में प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास द्वारा विश्वविद्यालय स्तरीय प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में पशुचिकित्सा की आधुनिक तकनीक व नवाचारों तथा पशुपालन के वैज्ञानिक तौर-तरीकों को माडल, चार्टस, पैनल्स, रगीन चित्रों द्वारा प्रदर्शित किया गया साथ ही पशुपोषण की उन्नत तकनीकों जैसे संतुलित पशु आहार बनाना, अजोला उत्पादन, यूरिया मोलासेस मिनरल ब्लॉक बनाने की विधि व माडल का सजीव प्रदर्शन भी किया गया। विश्वविद्यालय की प्रदर्शनी का जिला कलेक्टर, बीकानेर नम्रता वृष्णि सहित विभिन्न जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों द्वारा अवलोकन कर सराहना की।



किसान मेला एवं प्रदर्शनी

खाजूवाला के ग्राम पंचायत 14 बी.डी में दिनांक 28-29 जनवरी, 2025 को आयोजित किसान मेला में निदेशालय प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर द्वारा 28 जनवरी, 2025 को विश्वविद्यालय स्तरीय प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में पशुचिकित्सा की आधुनिक तकनीक व नवाचारों तथा पशुपालन के वैज्ञानिक तौर-तरीकों को माडल, चार्टस, पैनल्स, रगीन चित्रों द्वारा प्रदर्शित किया गया साथ ही पशुपोषण की उन्नत तकनीकों जैसे संतुलित पशु आहार बनाना, अजोला उत्पादन, यूरिया मोलासेस मिनरल ब्लॉक बनाने की विधि व माडल का सजीव प्रदर्शन भी किया गया।



जैव चिकित्सा अपशिष्ट के उचित प्रबंधन और निस्तारण विषय पर जागरूकता अभियान

वेटेनरी विश्वविद्यालय के जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण एवं प्रौद्योगिकी केंद्र, राजुवास द्वारा एस.डी.पी. मेमोरियल स्कूल, मुरलीधर व्यास नगर, बीकानेर में 23 जनवरी को विद्यार्थियों हेतु एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। केंद्र की मुख्य अन्वेषक डॉ. दीपिका धूडिया ने बताया कि जागरूकता कार्यक्रम के तहत बायोमेडिकल वेस्ट के उचित प्रबंधन और निस्तारण पर स्कूली विद्यार्थियों को विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। सहायक प्रध्यापक डॉ. देवेंद्र चौधरी ने अस्पतालों से निकलने वाले जैविकीय अपशिष्ट का मानव स्वास्थ्य व वातावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों से अवगत करवाया। कार्यक्रम के दौरान डॉ. जयंत स्वामी, प्राचार्य सीमा पुरोहित व अन्य अध्यापक उपस्थित रहे।





आई.सी.ए.आर. सहायक महानिदेशक ने की फैकल्टी के साथ समन्वय बैठक

वेटेनरी विश्वविद्यालय में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आई.सी.ए.आर.) के सहायक महानिदेशक (शिक्षा योजना एवं गृह विज्ञान) डॉ. बिमलेश मान ने 28 जनवरी को वेटेनरी महाविद्यालय के शिक्षकों एवं अधिकारियों के साथ समन्वय बैठक की। सहायक महानिदेशक डॉ. बिमलेश मान ने आई.सी.ए.आर. द्वारा देश के विभिन्न राज्य एवं केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में विभिन्न आई.सी.ए.आर. पोषित शैक्षणिक एवं अनुसंधान परियोजनाओं की जानकारी प्रदान की। डॉ. मान ने कहा कि वर्तमान परिवेश में कृषि, डेयरी एवं वेटेनरी में छात्राओं का प्रवेश प्रतिशत बढ़ा है। डॉ. मान ने बताया कि आई.सी.ए.आर. ने छठे डीन कमेटी की सिफारिशों के तहत नियमित पाठ्यक्रमों के साथ-साथ नये व्यवसायिक शिक्षा पाठ्यक्रमों को भी लागू किया है जो की युवाओं के लिए रोजगार का आधार बनेगा। डॉ. मान ने वेटेनरी विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षा, अनुसंधान एवं प्रसार के क्षेत्र में किये गये कार्यों की सराहना की एवं आई.सी.ए.आर. द्वारा आवंटित बजट का समुचित उपयोग हेतु सुझाव दिया। वेटेनरी विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने कहा कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा शैक्षणिक एवं अनुसंधान हेतु राज्य के विश्वविद्यालयों को हमेशा से ही बजट सहायता उपलब्ध करवाई जा रही है। कुलपति दीक्षित ने बताया कि वैश्विक दृष्टिकोण को देखते हुए अभी भी शिक्षा के क्षेत्र में बजट अनुदान कम है जिसको की बढ़ाने की बहुत आवश्यकता है। आई.सी.ए.आर. नोडल ऑफिसर एवं अधिष्ठाता स्नातकोत्तर अध्ययन प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने सभी का स्वागत किया एवं विश्वविद्यालय में आई.सी.ए.आर. मद से विकसित इंफ्रास्ट्रक्चर, चल रही विभिन्न परियोजनाओं की विस्तृत जानकारी प्रदान की। अधिष्ठाता एवं प्रति कुलपति प्रो. हेमन्त दाधीच ने विश्वविद्यालय में चल रही शैक्षणिक, अनुसंधान एवं प्रसार गतिविधियों की जानकारी प्रदान की एवं विश्वविद्यालय के मानव संसाधन एवं भौगोलिक स्थिति के बारे में परिचय दिया।



पशुपालन डिप्लोमा कार्यक्रम: सुधार और उपलब्धियां विषय पर कार्यशाला

स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर में दिनांक 29 जनवरी को राज्य में संचालित विभिन्न पशुपालन डिप्लोमा संस्थानों, पशुपालन विभाग एवं सचिवालय के अधिकारियों के मध्य पशुपालन डिप्लोमा कार्यक्रम: सुधार और उपलब्धियां विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। मुख्य अतिथि श्री जोराराम कुमावत, माननीय केबिनेट मंत्री, पशुपालन, डेयरी, गोपालन एवं देवस्थान विभाग, राजस्थान सरकार, डॉ. समित शर्मा, शासन सचिव तथा श्रीमती संतोष करोल, उपशासन सचिव, पशुपालन विभाग, प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच, प्रति कुलपति, राजुवास, डॉ. आनन्द सेजरा, निदेशक पशुपालन विभाग एवं अधिष्ठाता, पी.जी.वी.ई.आर., जयपुर ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत की। आगन्तुको का स्वागत करते हुए अधिष्ठाता प्रो. धर्मसिंह मीना ने इस कार्यशाला के विषय और प्रयोजन के बारे में अवगत कराया। मुख्य अतिथि माननीय मंत्री महोदय ने अपने उद्बोधन में कहा कि पशुओं को बेहतर चिकित्सा सेवाएं प्रदान करना हमारा लक्ष्य है। अगर किसान और पशुपालक मजबूत होंगे तो राज्य मजबूत होगा और आगे बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि राज्य के दुर्गम तथा सुदूर क्षेत्रों तक पशुपालन की बेहतर सेवाएं प्रदान करना हमारा लक्ष्य है, जिसके लिए जरूरी है कि पशुचिकित्सा शिक्षा से जुड़े संस्थान मापदंडों के अनुसार गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान कर कुशल एवं सक्षम मानव संसाधन उपलब्ध करावें। शासन सचिव डॉ. समित शर्मा ने कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए इसे एक अभूतपूर्व संगम बताया जिसमें सेवानिवृत्त पशुचिकित्सक, वर्तमान पशुचिकित्सक तथा भविष्य के पशुचिकित्सक से जुड़े लोग उपस्थित हुए हैं। उन्होंने बताया कि देश के निर्माण में, देशवासियों को रोजगार देने में, देश की अर्थव्यवस्था में, बच्चों को कुपोषण से बचाने में पशुपालन का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। पशुपालन डिप्लोमा कार्यक्रम शिक्षा के मापदंडों के अनुसार एवं समस्त व्यवस्थाओं के अनुरूप होनी चाहिए। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तथा व्यवस्थाएं प्रदान करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है, इसके माध्यम से ही हम राज्य का नाम रोशन कर सकते हैं। पशुपालन विभाग के निदेशक डॉ. आनन्द सेजरा ने अपने उद्बोधन में कहा कि इस कार्यशाला के आयोजन का उद्देश्य पशुचिकित्सा शिक्षा में सुधार लाना है, जिससे पशुपालकों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने में मदद मिलेगी। राजुवास के प्रति कुलपति प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच ने बताया कि पशुपालन डिप्लोमा कार्यक्रम बेहतर शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से इस बैठक का आयोजन किया गया है। राजुवास सदैव अच्छी शिक्षा प्रदान करने तथा इसे पशुपालकों तक पहुंचाने हेतु कटिबद्ध है। पशुपालन का परिदृश्य बदल रहा है तथा इस बदलते परिदृश्य में पशुपालन को बेहतर कैसे बनाया जा सकता है इस पर हमें चर्चा करनी है। कार्यक्रम के दौरान समस्त पशुपालन डिप्लोमा संस्थान के प्राचार्यों द्वारा प्रजेन्टेशन के माध्यम से संस्थान की स्थिति एवं उपलब्धियों का प्रदर्शन किया गया।



गौशाला प्रबंधकों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न

निदेशालय प्रसार शिक्षा, राजुवास बीकानेर एवं निदेशालय गोपालन, राजस्थान, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में पंजीकृत गौशालाओं के प्रबंधकों एवं डेयरी संचालकों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 29-31 जनवरी को आयोजित किया गया। समापन सत्र को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि सूरजमाल निमराना, प्रदेशाध्यक्ष गौ ग्राम सेवा संघ ने कहा कि गौ संरक्षण एवं संवर्धन में अच्छी नस्ल के जर्मप्लाम से कृत्रिम गर्भाधान की महत्ती आवश्यकता है अतः राजस्थान की विभिन्न देशी नस्लों के कृत्रिम गर्भाधान हेतु पशु चिकित्सालयों में सीमन की उपलब्धता होना बहुत आवश्यकता है। गौशालाओं को स्वावलंबी बनाने हेतु गोचर संरक्षण के कार्य को भी सरकार को प्राथमिकता देनी होगी। निदेशक क्लिनिक डॉ. प्रवीण कुमार बिश्नोई ने कहा कि गौशालाओं के निरन्तर सुचारु संचालन हेतु उनका स्वावलंबी होना बहुत आवश्यक है। गौवंश के स्वच्छ एवं संतुलित खान-पान तथा उचित प्रबंधन से उनको विभिन्न बीमारियों से बचा सकते हैं तथा उत्पादन स्तर में भी बढ़ोत्तरी की जा सकती है। प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. देवीसिंह ने बताया कि इस तीन दिवसीय प्रशिक्षण में संभाग के बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ जिलों के 35 गौशाला संचालक एवं प्रबंधक ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। विषय विशेषज्ञों द्वारा उन्नत गौशाला प्रबंधन, देशी गोवंश एवं संरक्षण, देशी गोवंश स्वच्छता एवं आवास प्रबंधन, संतुलित आहार, वर्षभर हराचारा, वर्मी कम्पोस्ट, गोबर का मूल्य संवर्धन राज्य सरकार की डेयरी फार्म योजनाएं, गौ नस्ल सुधार, पंचगव्य का महत्व आदि विषयों पर व्याख्यान के साथ-साथ आदर्श गौशाला एवं डेयरी भ्रमण करवाया।





यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

गांव कतरियासर में प्रौढ़ शिक्षा एवं बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं जागरूकता कार्यक्रम

बीकानेर 25 जनवरी। यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पोंसिबिलिटी के तहत डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बीकानेर द्वारा गोद लिए गांव कतरियासर में 25 जनवरी को निदेशक जन शिक्षण संस्थान श्री ओम प्रकाश सुथार तथा अविनाश भार्गव उपाध्यक्ष, बीकानेर प्रौढ़ शिक्षण समिति के निर्देशन में प्रौढ़ शिक्षा एवं बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन ग्राम पंचायत कार्यलय में किया गया। शिविर में वक्ताओं ने बालिका शिक्षा की महत्ता एवं आवश्यकता को विस्तार से बताया और महिलाओं के लिए जन शिक्षण संस्थान के द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। ग्रामवासियों ने कार्यक्रम में उत्सुकता से भाग लिया। शिविर का प्रबंधन डॉ. सुनील कुमार, सहायक आचार्य डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बीकानेर ने किया। इस शिविर के आयोजन में सहायक आचार्य वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर डॉ. मैना कुमारी, कार्यक्रम अधिकारी जन शिक्षण संस्थान महेश उपाध्याय तथा ग्रामवासियों का सहयोग रहा।



गांव बम्बलू में बेटी बचाओं-बेटी पढ़ाओं एवं प्रौढ़ शिक्षा जागरूकता कार्यक्रम

यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पोंसिबिलिटी के तहत पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर द्वारा गोद लिए गांव बम्बलू में 28 जनवरी को अविनाश भार्गव उपाध्यक्ष, बीकानेर प्रौढ़ शिक्षण समिति एवं निदेशक जन शिक्षण संस्थान श्री ओम प्रकाश सुथार के निर्देशन में बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं एवं प्रौढ़ शिक्षा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन ग्राम पंचायत कार्यलय में किया गया। शिविर में बालिका शिक्षा की महत्ता एवं आवश्यकता को विस्तार से बताया और महिलाओं के लिए जन शिक्षण संस्थान के द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। ग्रामवासियों ने कार्यक्रम में उत्सुकता से भाग लिया। शिविर का प्रबंधन डॉ. मैना कुमारी, समन्वयक यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी, राजुवास, बीकानेर के द्वारा किया। शिविर के आयोजन में कार्यक्रम अधिकारी जन शिक्षण संस्थान महेश उपाध्याय, समाजसेवी तुलसीराम नायक, डॉ. विश्वास, डॉ. सत्यम्, डॉ. जगदीश तथा ग्रामवासियों का सहयोग रहा।



गांव जोरजी का खेड़ा में बेटी बचाओं-बेटी पढ़ाओं एवं प्रौढ़ शिक्षा जागरूकता कार्यक्रम

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियां (उदयपुर) द्वारा यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पोंसिबिलिटी के तहत अंगीकृत गांव जोरजी का खेड़ा में दिनांक 29 जनवरी को प्रौढ़ साक्षरता तथा बेटी बचाओं-बेटी पढ़ाओं जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का आयोजन डॉ. टीकमचन्द गोयल, सहायक आचार्य एवं समन्वयक यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी द्वारा किया गया। इस अवसर पर ग्रामीण महिलाओं और पुरुषों को बालिका शिक्षा की महत्ता और आवश्यकता के साथ बालिकाओं के अधिकार और कर्तव्य के बारे में अवगत कराया गया। इस दौरान बाल विवाह निषेध, कन्या भ्रूण हत्या निषेध आदि महत्वपूर्ण जानकारी साझा की गई। प्रौढ़ साक्षरता कार्यक्रम के तहत बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान तथा जीवन कौशल अर्जित कर निरक्षरता खत्म करने का संदेश दिया। शिविर के आयोजन में डॉ. महेन्द्र मील, डॉ. ममता कुमारी, डॉ. दिनेश जाम्ब सहित उ.प्रा.वि., जोरजी का खेड़ा के स्टॉफ, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता तथा ग्रामीणों का सहयोग रहा।



गांव खतेपुरा में आयुर्वेदिक शिविर

पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर द्वारा यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पोंसिबिलिटी के तहत गोद लिये गांव खतेपुरा में दिनांक 18 जनवरी को क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान के सहयोग से सरपंच श्रीमती मूली देवी मीना के मार्गदर्शन में निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में मौसमी बीमारियों से सम्बन्धित रोगों का निःशुल्क उपचार कर दवाईयां प्रदान की गयी। शिविर से लगभग 120 ग्रामीण लाभान्वित हुए। शिविर का आयोजन डॉ. सजय कुमार रेवानी, सहायक आचार्य एवं समन्वयक यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी द्वारा किया गया। शिविर में डॉ. रोहिताश कुमार, डॉ. रोनक, डॉ. अमन आर्या तथा डॉ. योगेश कुमार का सहयोग रहा।



रामपुरावास में बेटी बचाओं-बेटी पढ़ाओं एवं प्रौढ़ साक्षरता जागरूकता

डेयरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बरसी (जयपुर) द्वारा यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पोंसिबिलिटी के अन्तर्गत गोद लिये गांव रामपुरावास में दिनांक 31 जनवरी को प्रौढ़ साक्षरता एवं बेटी बचाओं-बेटी पढ़ाओं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का नेतृत्व डॉ. शफाद खान, सहायक आचार्य एवं समन्वयक यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य साक्षरता के महत्व तथा बालिकाओं की शिक्षा में सुधार के महत्व पर जोर देना था।





पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरु)

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरु) द्वारा दिनांक 7, 10, 14, 18, 21, 23, 25 एवं 29 जनवरी को गांव बंबू, मेहरासर उपदियां, पताम्देसर, डूकर, गेवरसर, गोठयां बड़ी, मालवास एवं धनोठी छोटी गांवों में तथा दिनांक 30 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 231 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़, द्वारा दिनांक 10, 16 एवं 23 जनवरी को गांव अमरपुरा, अनूपगढ़, मानकासर एवं 22 एस.टी.बी. गांवों में तथा दिनांक 21 एवं 25 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 183 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 7, 8, 9, 10, 15, 16, 17 एवं 18 जनवरी को गांव उबार, मंहगाया, मोरोली, अजान, गुनसारा, ताखा, सहनाबली एवं सजौला गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 152 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 4, 10, 16, 18, 23, 25 एवं 27 जनवरी को गांव चौरा खेड़ा, भांसगज, ऐदलपुर, बहरावती, कधपूर, डण्डौली एवं कुईया गांवों में तथा दिनांक 28 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 218 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 15-16 जनवरी को केन्द्र परिसर में दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 25 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरौही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरौही द्वारा 8 एवं 18 जनवरी को गांव वीरोली एवं पाडीव गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 49 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा द्वारा दिनांक 3 एवं 4 जनवरी को गांव पोटला एवं देवरी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 65 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा दिनांक 4, 8 एवं 10 जनवरी को गांव भीमगंजमण्डी, रामनगर एवं कैथून गांवों में तथा दिनांक 28 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 101 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 4, 7, 10, 13, 18, 20 एवं 23 जनवरी को गांव नुक्कड़, गणेशपुरा, चोरुपुरा, लाम्बा, नयागांव, बालापुरा एवं इस्लामपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 130 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 4, 7, 8, 9, 10, 13, 15, 16, 17, 18, 20, 21, 22, 23, 24 एवं 25 जनवरी को गांव बड़वासी, खिरोड़, भगेरा, नोहरा, कोलसिया, गिरधरपुरा, पहाड़ीला, बिरोल, खिवासर, छऊ, बासड़ी, बरुली, हांसलसर, टीटनवाड़, किरपुरा एवं मैनपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 290 पशुपालकों एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर द्वारा दिनांक 3, 4, 8, 16, 17, 21, 25, 27, 29 एवं 31 जनवरी को गांव कुंचावास, रामसिंहपुरा, बरसी नागा, जोबनेर, डेरा, चिनोटिया, कालख, झोटवाड़ा, हिंगोनिया एवं बोबास गांवों में तथा दिनांक 7, 9, 20 एवं 23 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 319 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 29 एवं 30 जनवरी को गांव छाया एवं गान्धेली गांवों में तथा दिनांक 23-29 जनवरी को केन्द्र परिसर में कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 118 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।





एवियन इन्फ्लुएंजा: एक वैश्विक स्वास्थ्य संकट

एवियन इन्फ्लुएंजा जिसे बर्ड फ्लू कहा जाता है, एक अत्यधिक संक्रामक विषाणुजनित रोग है, जो घरेलू और जंगली पक्षियों को प्रभावित करता है। यह बीमारी मनुष्य और अन्य पशुओं को भी संक्रमित कर सकती है। बर्ड फ्लू आमतौर पर इन्फ्लुएंजा-ए वायरस के कारण होता है, जो विभिन्न उपप्रकारों में पाया जाता है जैसे $A(H_2N_2)$, $A(H_7N_9)$ और $A(H_5N_2)$ । यह वायरस ऑर्थोमिक्सोविरिडे परिवार से सम्बन्धित होता है, जिसके कारण यह पक्षियों के श्वसन तंत्र और पाचन तंत्र को प्रभावित करता है, जिससे बुखार, खांसी, श्वास लेने में कठिनाई और अन्य शारीरिक लक्षण उत्पन्न होते हैं।

वायरस का प्रसार: यह वायरस आमतौर पर जंगली जलपक्षियों जैसे बतख और हंस में पाये जाते हैं। यह पक्षी वायरस को अपनी आंठों में रखते हैं और मल के माध्यम से वायरस को फैलाते हैं। संक्रमित पक्षी स्वस्थ पक्षियों को लार, नाक के स्त्राव और मल के द्वारा संक्रमित करते हैं। मनुष्यों में वायरस का संक्रमण आमतौर पर तब होता है जब वे बीमार पक्षियों के संपर्क में आते हैं जैसे पोल्ट्री किसान और मांस काटने वाले श्रमिक। यह वायरस प्रवासी पक्षियों द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर फैल सकता है और अंतराष्ट्रीय व्यापार के माध्यम से भी फैल सकता है।

बर्ड फ्लू के लक्षण (पक्षियों में): आमतौर पर बर्ड फ्लू वायरस के दो प्रकार होते हैं: कम विषाणुता वाला बर्ड फ्लू (HPAI) और उच्च विषाणुता वाला बर्ड फ्लू (HPAI)। उच्च विषाणुता वाला बर्ड (HPAI) और अधिक गंभीर लक्षण उत्पन्न करता है और तेजी से फैल सकता है।

कम विषाणुता वाले बर्ड फ्लू के लक्षण:

- हल्का बुखार
- गले में हल्की खराश
- खाने में कमी
- हल्की खांसी
- आंखों में पानी आना
- सामान्य गतिविधियों में कमी

उच्च विषाणुता वाले बर्ड फ्लू के लक्षण:

- अचानक मृत्यु
- तेज बुखार
- नाक से स्त्राव
- नीले या बैंगनी रंग के पैरो और सिर के हिस्से
- त्वचा के नीचे रक्त स्त्राव
- पंजो और पैरो में सूजन
- शरीर में कमजोरी और गतिविधियों में कमी
- श्वसन तंत्र में गंभीर समस्या जैसे श्वास लेने में कठिनाई

मनुष्यों में बर्ड फ्लू के लक्षण मानव इन्फ्लुएंजा के लक्षणों जैसे होते हैं, जिनमें बुखार, गले में खराश, सिरदर्द, खांसी और मांसपेशियों में दर्द शामिल हैं जो कई दिनों के गर्भावधि काल के बाद प्रकट होते हैं। गंभीर संक्रमण के कारण आंखों में सूजन वायरल न्यूमोनिया और तीव्र श्वसन रोग जैसी जटिल जीवन घातक घटनाएं हो सकती हैं।

उपचार (मनुष्यों और पक्षियों में):

एंटीवायरल दवाएं: ओसेल्टामिविर एवं जानामिविर यह प्रमुख एंटीवायरल दवाएं हैं जो बर्ड फ्लू के संक्रमण के उपचार में प्रभावी होती हैं। यह दवाएं लक्षणों को कम करने और रोग की गंभीरता को घटाने में मदद करती हैं।

अस्पताल में देखभाल: गंभीर मामलों में रोगी को अस्पताल में भर्ती कर विशेष देखभाल दी जानी चाहिए जिसमें ऑक्सीजन थेरेपी और श्वसन सहायता की आवश्यकता हो सकती है।

पशुचिकित्सक की सलाह: संक्रमित पक्षियों को अलग कर दिया जाना चाहिए और पशु चिकित्सक सलाह से लक्षणों के आधारित उपचार लेना चाहिए।

बर्ड फ्लू की रोकथाम:

मनुष्यों में रोकथाम:

संक्रमित पक्षियों से बचाव: मनुष्यों को संक्रमित पक्षियों से दूर रखना चाहिए। पोल्ट्री फार्म या मांस काटने के स्थानों पर काम करते समय सुरक्षा उपकरण जैसे मास्क, दस्ताने और चश्मे का प्रयोग करना चाहिए।

हाइजीन और स्वच्छता: हाथों को बार-बार साबुन और पानी से धोना चाहिए और सैनिटाइजर का इस्तेमाल भी प्रभावी हो सकता है।

टीकाकरण: कुछ देशों में पोल्ट्री श्रमिकों और उच्च जोखिम वाले व्यक्तियों में H_2N_2 वायरस के खिलाफ टीका उपलब्ध है।

स्वास्थ्य निगरानी: यदि किसी व्यक्ति को संक्रमित पक्षी के संपर्क में आने के बाद फ्लू जैसे लक्षण महसूस होते हैं तो तुरंत चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए।

पक्षियों में रोकथाम:

बायोसिक्योरिटी उपाय: पोल्ट्री फार्मों में सख्त बायोसिक्योरिटी लागू करनी चाहिए जैसे उपकरणों की सफाई, फार्म में प्रवेश पर नियंत्रण और संक्रमित पक्षियों के संपर्क से बचाव।

कॉरटाईम: नए पक्षियों को मौजूदा झुंड में शामिल करने से पहले 15–20 दिन के लिए अलग किया जाना चाहिए, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे वायरस से मुक्त हैं।

निगरानी और परीक्षण: पोल्ट्री झुंडों में नियमित निगरानी और परीक्षण से वायरस के शुरुआती लक्षणों का पता चलता है और प्रकोप को जल्दी नियंत्रित किया जा सकता है।

डॉ. दीपिका धूड़िया

सहायक प्राध्यापक, वेटेनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

पशुपालन ने बनाया रामसिंह को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर

राजस्थान में भेड़ व बकरी पालन ग्रामीण क्षेत्र में एक प्रमुख आजीविका का स्रोत है। बारानी खेती कम वर्षा मानसून आधारित खेती के कारण पशुपालन किसानों की आवश्यकता का आधार है, इसी कारण चूरु जिले में बकरी पालन को अधिक महत्व दिया जाता है, क्योंकि भेड़ व बकरी पालन से गाय एवं भैंस पालन की तुलना में कम खर्च करके अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है। भेड़-बकरी पालन का ऐसा ही उदाहरण प्रस्तुत किया है राजगढ़ तहसील के हमीरवास गांव के रामसिंह ने जो पूर्व में केवल वर्षा आधारित खेती पर ही निर्भर थे। आय के नए स्रोत की तलाश में वह पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ के सम्पर्क में आए जहां उन्हें भेड़ व बकरी पालन के बारे में उचित जानकारी प्रदान की गई। पशु विज्ञान केन्द्र के विशेषज्ञों से प्रेरित होकर उन्होंने भेड़ व बकरी पालन की शुरुआत की। वर्तमान में उनके पास 45 भेड़, 23 बकरियां, 03 भैंस एवं एक गाय है। भेड़ों के मेंमने लगभग 5–7 हजार, बकरियों के मेंमने लगभग 6–8 हजार रु. में बेचते हैं। गाय व भैंस के दूध के साथ-साथ बकरियों के दूध को बेचकर अच्छी आय प्राप्त कर लेते हैं। इसके साथ ही भेड़ों की ऊन की कटिंग कर बेचने पर उन्हें अतिरिक्त आय प्राप्त हो जाती है। रामसिंह लगभग 3–4 लाख रु. सालाना आय प्राप्त कर लेते हैं। इनकी सफलता से आसपास के गांव वाले उनसे पशुपालन सम्बन्धित जानकारी लेते रहते हैं। रामसिंह समय-समय पर पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण शिविरों में भाग लेकर कृमीनाशक, टीकाकरण एवं उचित पशुपोषण की जानकारी प्राप्त करते हैं। इस प्रकार गांव में रोजगार के साधन कम होने पर भी गांव में ही रहकर भेड़ व बकरी पालन से अपने परिवार का जीवन निर्वाह आसानी से करने का उदाहरण प्रस्तुत किया है।



सम्पर्क- रामसिंह

गांव-हमीरवास, रतनगढ़, चूरु (मो. मो.7357709057)



भूमिहीन किसानों के लिए मुर्गीपालन एक उन्नत व्यवसाय: निदेशक

कुक्कुट पालन भारत में पशुधन और कृषि क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण घटक है। कुक्कुट पालन एक न्यूनतम निवेश वाला व्यवसाय है तथा कम समय में अधिक लाभ देता है। ग्रामीण भारत में सीमांत और भूमिहीन परिवार के लिए बैकयार्ड मुर्गीपालन एक महत्वपूर्ण आय का स्रोत है। वर्ष 2022-23 में देश के खाद्य भण्डार में 4.99 मिलियन मेट्रिक टन मांस तथा 13,838 करोड़ अंडों का योगदान किया तथा वर्ष 2022-23 में मुर्गीपालन व्यवसाय में राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में 2.3 लाख करोड़ रु.



का योगदान किया था। एक शोध के अनुसार यह व्यवसाय लगभग 25 प्रतिशत की तेजी से बढ़ रहा है तथा इसमें विकास की भी असीम सम्भावनाएँ हैं। मुर्गीपालन भूमिहीन किसानों और बेरोजगारों को स्व:रोजगार उपलब्ध कराने का एक प्रभावी व्यवसाय है। इस व्यवसाय में परिवार का प्रत्येक सदस्य अपना योगदान दे सकता है। अन्य पशुओं जैसे बकरी, भेड़, गाय और भैंस की तुलना में मुर्गीपालन में कम स्थान तथा न्यूनतम निवेश की आवश्यकता होती है। इसकी प्रमुख समस्याएँ जैसे पूरक पोषण का अभाव, मुर्गियों की कम उत्पादकता, सुदृढ़ स्थानीय विपणन की कमी और उचित स्वास्थ्य देखभाल आदि है। इन समस्याओं को दूर कर पशुपालक मुर्गीपालन से अत्यधिक लाभ प्राप्त कर अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकता है। अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए पशुपालकों को पक्षियों का चयन सावधानी पूर्वक करना चाहिए। पशुपालकों को बाजार की मांग को समझते हुए निर्णय करना चाहिए। बाजार की मांग के अनुसार ही जैसे अण्डों के उत्पादन के लिए, मांस प्राप्ति के लिए अथवा दोनों के लिए मुर्गियों का चयन करना चाहिए। पक्षियों के चयन करने के पश्चात आवास व्यवस्था तथा आहार प्रबंधन पर विशेष ध्यान देना चाहिए। स्वास्थ्य देखभाल में पक्षियों के टीकाकरण तथा कृमिनाशक दवाओं का समय-समय पर उपयोग करना चाहिए। अण्डा, मांस उत्पादन के पश्चात इनके विपणन पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए। पशुपालकों को बिना बिचौलियों की भागीदारी, स्थानीय बाजार, स्वयं सहायता समूहों, किसान उत्पादक संगठनों आदि जैसे विभिन्न विपणन चैनलों के माध्यम से अण्डों व मांस का विपणन करना चाहिए। यह व्यवसाय पशुपालकों के लिए एक अतिरिक्त आय का मुख्य स्रोत है। राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के कृषि विज्ञान केन्द्र तथा विभिन्न पशु विज्ञान केन्द्रों के द्वारा समय-समय पर मुर्गी पालन पर प्रशिक्षण आयोजित कराये जाते हैं। पशुपालक इन प्रशिक्षणों में भाग लेकर तकनीकी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तथा मुर्गीपालन व्यवसाय शुरू कर उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर अधिक से अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

“धीणे री बात्यां”

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी
केन्द्रों से प्रसारण



पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी
प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाइन
1800 180 6224

प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

मुख्य संपादक

प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच

संपादक

डॉ. दीपिका धूड़िया

डॉ. मनोहर सैन

संकलन सहयोगी

सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय

☎ 0151-2200505

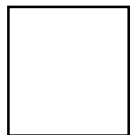
email : deerajuvass@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/
विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में



स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच